इसीलिए वे इसे ब्लूज़ कहते हैं

लॉरिंडा कीज़ लौंग

गुंथे हुए हैं उनके काले बाल, नाक पर फिसल रहा है बड़ा सा चश्मा। आर्थर फ़्लावर मंच पर पहुंचे और अपनी साज-सज्जा को दिया अंतिम रूप। पैरों में नीली जीन्स पर वह घुंघरुओं वाली डोरी बांधते हैं और इसी तरह की एक और डोरी वह अपने टखने पर भी बांधते हैं। अपनी कलाइयों पर पहनते हैं एक-दो ब्रेसलेट और अपने काले सूट और काली शर्ट पर मणकों, सीपियों और तावीज़ वाला हार पहन लेते हैं। तूंबा, शंख, मणकों का एक थैला और सीपियां मेज पर रख वह छेड़ते हैं हार्मोनिका पर एक धुन, और अपने लैपटॉप के सामने मौजूद माइक को हल्के से थपथपाते हैं।

अंग्रेजी का यह प्रोफ़ेसर और उपन्यासकार अब व्याख्यान देने के लिए तैयार है। ''मैं आज शाम ब्लूज़ के बारे में बात करने जा रहा हूं,'' मेम्फ़िस, टेनेसी के मूल वासी फ़्लावर लय में बोलते हैं। वह कहते हैं कि मैं अमेरिका में अफ़्रीकी प्रभाव वाली संगीत पीढ़ी के बारे में कुछ भी जाने बगैर वयस्क हो गया जिसके लिए मेरा मूल शहर प्रसिद्ध है। फ़्लावर ने अपनी संगीत और संस्कृति की जड़ें, अफ़्रीकी और अमेरिकी, न्यू यॉर्क में तलाश की। वह मंच पर एक कविता प्रस्तुत कर रहे थे और बाद में किसी ने उन्हें मेम्फिस का ब्लूज़मैन कहकर पुकारा। तब उन्होंने अपनी विरासत की पड़ताल की और अपनी कथाओं और साहित्यिक व्याख्यानों में संगीत को शामिल किया। वह न्यू यॉर्क स्टेट यूनिवर्सिटी में अंग्रेजी के प्रोफ़ेसर रहे हैं और अब न्यू यॉर्क में सिराक्यूज यूनिवर्सिटी में साहित्य और लेखन पढ़ाते हैं। उनके उपन्यास- *अनादर गुड लविंग ब्लूज़, डे मोजो ब्लूज़*- में उनके सांगीतिक मूल की तरह ही स्पंदन हैं, चाहे वह कोई प्रेम कहानी कह रहे हों या फिर अपनी तरह वियतनाम युद्ध के सैनिकों के अमेरिकी समाज में पुनर्मिलन के बारे में बता रहे हों।

ब्लूज की लय- कैंपफायर के इर्दगिर्द उनकी अफ़्रीकी गायन की गूंज, अमेरिका के दक्षिणी हिस्से के खेतों में गुलामों द्वारा एक-दूसरे को पुकारना, शाम के समय बागानों की झोंपड़ियों में आशा के गीत गाना- फ़्लावर के बोलने की शैली और उनके साहित्य में यह पूरी तरह छाई है। साधारण लोगों के बारे में उनकी कथाओं, अक्सर गरीबों और ग्रामीणों की, में रहस्य, जादू और मौखिक परंपरा से चली आ रही प्राचीन कहानियां गुंथी होती हैं।

जयपुर साहित्य उत्सव के बाद फ़्लावर ने नई दिल्ली के अमेरिकन सेंटर में फ़रवरी में लोगों को बताया, ''अफ़्रीकी अमेरिकी संस्कृति में मौखिक पंरपरा के इतने ताकतवर होने का कारण यह है कि जब अफ़्रीकियों को अमेरिका लाया गाया तो उन्हें बेहतर गुलाम बनाने के लिए सिलसिलेवार तरीके से अपनी संस्कृति से दूर कर दिया गया।'' गुलामों के पास जो था ''वह बस उतना ही था जो मौखिक परंपरा के जरिये वे ले जाने योग्य थे।'' कुछ दक्षिणी राज्यों में तो ''अश्वेतों के लिए पढ़ना और लिखना कानून के खिलाफ था,'' वह कहते हैं। ''संस्कृति को बचाए रखने और बेहद प्रतिकूल परिस्थितियों मे जीवंत रखने के लिए के लिए मौखिक परंपरा का इस्तेमाल किया गया।''

बाद में, फ़्लावर स्पष्ट करते हैं, ''बीसवीं सदी के मोड़ पर व्यापक माइग्रेशन के समय जब अश्वेत लोग खेतों से निकलकर दक्षिण के शहरों में पहुंचे और ग्रामीण लोगों से शहरी लोग बनने लगे तो मौखिक परंपरा ने कला का स्वरूप ले लिया। उनकी लोक कथाओं ने साहित्य का रूप ले लिया और उनका ब्लूज़ संगीत जैज़ बन गया।''

वह अपने लैपटॉप पर प्ले वाला बटन दबाते हैं, दक्षिण के खेतों में बीते जमाने की किसी साथी की अपने साथी मजदूरों को पुकारती कोई आवाज, पूरी तरह रूदन नहीं, अपनी सौंदर्यता और करुणा के चलते हमारी सांस रोक देती है। और फिर जिम हेंड्रिक्स का गीत! क्या गिटार से आते वे रुलाई के सुर सांस्कृतिक और आध्यात्मिक तौर पर उसी स्थान के हैं जहां की वे प्राचीन खेतों की पुकार। फिर अफ़्रीकी अमेरिकी चर्च की सामूहिक प्रार्थना से आया दक्षिणी परंपरा का गॉस्पेल गीत शुरू होता है। उसके बाद दक्षिण के अश्वेत ईसाई उपदेशक मार्टिन लूथर किंग, जू. के शब्दों की लय। फिर लुइज़ियाना के ब्लूज़मैन क्रिस थॉमस किंग का हिप हॉप। यह वही प्राचीन बीट है जो दिल को छू लेती है और विभिन्न संस्कृतियों, वर्षों, क्षेत्रों और अनुभवों से गुजरकर भी बची रही है।

फ़्लावर कहते हैं, यही ब्लूज़ है।

खेतों में खास तरह से पुकारने का तरीका गुलाम एक-दूसरे तक अपना संदेश, कि वे कैसा महसूस कर रहें हैं, बिना शब्दों का इस्तेमाल किए, पहुंचाने के लिए करते थे। हर एक का अपना खास अंदाज़ था और संगीत इसमें समाया था। खेत में दूसरी ओर काम कर रहा मित्र अपनी अलग ही खास पुकार में जवाब देता था। यही पुकार और जवाब अफ़्रीकी संगीत का हिस्सा है, यह दक्षिणी गॉस्पेल और रॉक एंड रॉल का आधार भी है।

रूदन की आवाज़ और इसके द्वारा अभिव्यक्त की जाने वाली उदासी, ब्लूज़ के सबसे पहले संगीत के रूप में विकसित हुई। बहुत से लोग जब ब्लूज़ शब्द सुनते हैं तो वे उदासी और दुख के बारे में सोचते हैं। ''लेकिन ब्लूज़ ज़िंदगी के उतार-चढ़ाव के दौर से गुजरने के बारे में है,'' फ़्लावर कहते हैं। ''...यह इस तरह से काम करता है कि आप बुरा महसूस कर रहे हो, क्योंकि आप ज़िंदगी में कई बार बुरा महसूस करते हो, तो आप इस बारे में बात कर रहे हो- ट्रबल इन माई माइंड, आई एम ब्लू, बट आई वोंट बी ब्लू आलवेज़, सन यू गोट्टा शाइन इन माई बैकडोर समडे, आई मे बी ब्लू बट आई वोन्ट बी ब्लू आलवेज़- अगली चीज़ जो आप जानेंगे वह यह कि आप बुरा महसूस नहीं कर रहे होंगे।''

फिर वह अमेरिका के महान ब्लूज़ गायक दीना वाशिंगटन के गीत बजाते हैं जिसमें वह क्लासिक *बर्थ ऑफ़ द ब्लूज़/आई डोंट हर्ट एनीमोर* प्रस्तुत करते हैं। उनकी आवाज और गाने के बोलों में संगीत के मोड़ और संक्रमण, खेतों में पुकारने की आवाजों से लेकर ''चीजें ठीक होनी ही हैं'' में सीधे-सीधे आशा के स्वर सुनाई देते हैं। ''ब्लूज़ कला के एक रूप, संगीत से कुछ ज़्यादा है,'' फ़्लावर कहते हैं। ''वे अफ़्रीकी अमेरिकी संस्कृति के उतार-चढ़ाव से बंधे सांस्कृतिक औजार की तरह हैं... जब इस संस्कृति को बेकार कहकर खारिज कर दिया गया तो ब्लूज़ ने हमारा साथ दिया।''

फ़्लावर्स न्यू रेनेसां राइटर्स गिल्ड के संस्थापक हैं जो आधी शताब्दी पहले से चले आ रहे हार्लेम राइटर्स गिल्ड से निकली शाखा है। हार्लेम राइटर्स गिल्ड उन अफ़्रीकी अमेरिकियों की मदद करता है जो लेखन के जरिये अपने अनुभव बताना चाहते हैं। ''हममें से कुछ हैं जो मानते हैं कि हमें दो तरह की शैक्षिक परंपराएं विरासत में मिली हैं। पश्चिमी लिखित परंपरा और मौखिक अफ़्रीकी परंपरा। और हम फ़्यूजन के जरिये इन दोनों ही परंपराओं के विकास में योगदान की उम्मीद करते हैं।''

वह कहते हैं, ये लेखक, ''मौखिक परंपरा के आधार पर अनूठी अफ़्रीकी अमेरिकी शैक्षिक भाषा- और उसके संगीत के सुरों, को आगे बढ़ाने का पूरी चेतना के साथ प्रयास कर रहे हैं।''

अजीत कुमार

जयपुर साहित्य

ऊपर: नई दिल्ली में अमेरिका के डिप्टी चीफ़ ऑफ़ मिशन स्टीवन जे. व्हाइट के आवास पर साहित्य उत्सव के बाद आयोजित स्वागत समारोह में आर्थर फ़्लावर्स (बाएं) शिल्पकार एंड्रू लोगान और एशिया हेरिटेज फ़ाउंडेशन के चेयरमैन राजीव सेठी से बातचीत करते हुए। दाएं: जनवरी में जयपुर साहित्य उत्सव में कहानियां सुनाते फ़्लावर्स।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

फ़्लावर्स का ब्लॉग
http://rootsblog.typepad.com/rootsblog/

ऑडियो इंटरव्यू, संगीत के साथ
http://wiredforbooks.org/arthurflowers/index.htm

दीना वाशिंगटन
http://www.youtube.com/watch?v=-FsqEG_3p5g

ब्लूज़
http://en.wikipedia.org/wiki/Blues

क्रिस थॉमस किंग
http://www.christhomasking.com/

''हर एक के जीवन में आती हैं कुछ मुश्किलें, गिरती हैं कुछ बूंदें
संकट से गुजरकर ही तुम पहचान पाओगे अपनी वास्तविक ताकत
जब मुश्किल समय आता है तो हम लड़ते हैं वे लड़ाइयां
जिनके बारे में हमें पता है कोई और जीत नहीं सका
याद रखो जो वृद्ध ब्लूज़ डॉक्टर ने कहा, मुश्किलें हमेशा नहीं रहतीं।''

*-**आर्थर फ़्लावर्स**, नई दिल्ली, जनवरी 2009*